भारत में संतुलित औद्योगिक वितरण की सुनिश्चितता

प्रिलिम्स के लिये: भारत का औद्योगिक क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र, उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन, पीएम गति शक्ति- राष्ट्रीय मास्टर प्लान, स्टार्ट-अप इंडिया, मेक इन इंडिया 2.0, विशेष आर्थिक क्षेत्र

मेन्स के लिये: भारत में औद्योगिक क्षेत्र से जुड़ी चुनौतियाँ, औद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिये हालिया सरकारी पहल

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

वित्त संबंधी स्थायी समिति (SCoF) ने सरकार से आग्रह किया है कि वह **सभी राज्यों में उद्योगों का समान रूप से वितरण सुनिश्चित करने** के लिये एक **कार्ययोजना** तैयार करे, जिससे **संतुलित और न्यायसंगत आर्थिक विकास** हो सके।

- समिति ने यह अवलोकन किया कि यद्यपि **उद्योग एक राज्य विषय है,** फिर भी राष्ट्रीय औद्योगिक नीति को आकार देने में केंद्र सरकार की भूमिका महत्त्वपूर्ण बनी रहती है।

SCoF के मुख्य अवलोकन एवं सिफारिशें

- **मुख्य अवलोकन:**
  - **स्थगित विनिवेश एवं PSE नीति:** दिसंबर 2021 की नीति के तहत गैर-रणनीतिक क्षेत्रों में घाटे वाली केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों (CPSE) के निजीकरण/बंद करने की घोषणा के बावजूद अब तक कोई प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ है; विनिवेश योजनाएँ स्थिर बनी हुई हैं।
  - **निवेश दर बनाम विकास की आवश्यकता:** भारत की निवेश दर अगले दशक में **GDP का लगभग 31%** ही है, जो विकास की आवश्यकताओं की तुलना में कम है।
  - **कमज़ोर राज्य प्रोत्साहन:** यद्यपि उद्योग राज्य विषय है, फिर भी केंद्रीय पहलें महत्त्वपूर्ण हैं; हालाँकि, **राज्यों को अपने PSU सुधारने हेतु दिये गए प्रोत्साहनों का समुचित उपयोग नहीं हुआ है और वे बड़े पैमाने पर अप्रभावी रहे हैं।**
  - **राज्यों पर वित्तीय दबाव:** कई राज्यों के **अत्यधिक ऋणग्रस्त** होने से उनकी **अवसंरचना, औद्योगिक विकास और संतुलित वृद्धि में निवेश** करने की क्षमता सीमित हो जाती है।
- **मुख्य सिफारिशें:**
  - **संरचनात्मक एवं औद्योगिक सुधार: गैर-रणनीतिक एवं घाटे में चल रही CPSE के विनिवेश/बंद** करने की प्रक्रिया को तेज़ किया जाए तथा **राज्य PSU सुधारों** के लिये केंद्र की प्रोत्साहन योजनाओं को मज़बूत किया जाएँ।
    - साथ ही, एक **राष्ट्रीय कार्ययोजना** तैयार की जाएँ ताकि **औद्योगिक विकास संतुलित हो, क्षेत्रीय असमानताएँ घटें और समान विकास को बढ़ावा मिले।**
  - **राजकोषीय एवं निवेश रणनीति: सार्वजनिक एवं निजी निवेश** को प्रोत्साहित कर **निवेश दर को GDP के 35% तक बढ़ाया जाएँ** (ताकि 8% **GDP वृद्धि दर** को बनाए रखा जा सके)। साथ ही, अत्यधिक ऋणग्रस्त राज्यों के लिये ऐसी उपयुक्त राजकोषीय सुधार नीतियाँ लागू की जाएँ जो **ऋण-घटाने** और साथ ही **बुनियादी अवसंरचना तथा सामाजिक क्षेत्र में निवेश** जारी रखने के बीच संतुलन बना सकें।

भारत में असंतुलित औद्योगिक वृद्धि हेतु मुख्य कारक कौन-से हैं?

- **ऐतिहासिक कारक:** भारत में औद्योगिक विकास की असमानता की नींव **ब्रिटिश औपनिवेशिक काल** में पाई जाती है। जब **व्यापार और बंदरगाहों**

तक पहुँच की सामरकि सुवधिा के लयि उद्योगों को कुछ चुने हुए क्षेत्रों तक सीमति कर दयिा गया था।
    - **उदाहरण: जूट उद्योग बंगाल (कोलकाता)** में केंद्रति था और **कपास वस्त्र उद्योग महाराष्ट्र (मुंबई) में।** स्वतंत्रता के बाद भी यह **क्षेत्रीय औद्योगकि असंतुलन बना रहा,** जसिके कारण कई क्षेत्र पछिड़े रह गए।
- **भौगोलकि एवं अवसंरचना संबंधी कारक:** औद्योगकि वृद्धि पर **भौगोलकि स्थति और अवसंरचना** का गहरा प्रभाव पड़ता है। **हमिालयी राज्यों और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र** जैसे कठनि भौगोलकि इलाकों में **कमज़ोर कनेक्टविटिी, वद्युित की कमी तथा उच्च स्थापना लागत** के कारण बड़े पैमाने पर उद्योग सीमति हैं।
    - इसके वपिरीत, **तमलिनाडु, गुजरात एवं महाराष्ट्र** जैसे तटीय तथा मैदानी क्षेत्र प्रमुख बंदरगाहों (मुंबई, कांडला), **राजमार्गों व औद्योगकि गलयिारों** जैसे बेहतर बुनयिादी अवसंरचना से लाभान्वति होते हैं, जो औद्योगकि वस्तिार के लयि **अनुकूल परस्थितियिाँ** उत्पन्न करते हैं और उनके **औद्योगकि नेतृत्व** को समर्थन देते हैं।
- **कुशल जनशक्ति की उपलब्धता: बेंगलुरु (IT क्षेत्र)** और **चेन्नई (ऑटोमोबाइल)** जैसे औद्योगकि क्लस्टर **वशि्ववद्यिालयों तथा तकनीकी संस्थानों** से समर्थति कुशल श्रमकिों को आकर्षति करते हैं।
    - वहीं **झारखंड** और **छत्तीसगढ़** जैसे राज्यों में सीमति शैक्षकि ढाँचे तथा व्यावसायकि प्रशक्षिण की कमी के कारण **कौशल-आधारति उद्योगों** का वकिास कठनि हो जाता है।
- **नीति एवं नयिोजन असमानताएँ:** औद्योगकि वृद्धि **लक्षति नीतगित समर्थन** से प्रभावति होती है। **हरति क्रांति ने पंजाब, हरयिाणा तथा पश्चमिी उत्तर प्रदेश** को लाभ पहुँचाकर **कृषि-औद्योगकि वस्तिार** को प्रोत्साहति कयिा, जबकि पूर्वी और मध्य क्षेत्र पछिड़ गए।
    - **तमलिनाडु** जैसे **सक्रयि औद्योगकि नीतयिों** वाले राज्य उद्योगों को आकर्षति करते हैं, जबकि **कम सहायक ढाँचे** वाले राज्य पीछे रह जाते हैं।
- **समूहन (Agglomeration) प्रभाव:** उद्योग प्राय: एकत्रति होकर **पैमाने की अर्थव्यवस्था, कुशल आपूर्तकिर्त्ताओं और लॉजस्टिकि सुवधिाओं** का लाभ उठाते हैं, जसिसे **क्षेत्रीय असमानताएँ** और मज़बूत हो जाती हैं।
    - उदाहरण: **तमलिनाडु का ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रॉनक्सि उद्योग तथा गुजरात का वस्त्र कलस्टर।** इसके वपिरीत, **ओडशिा और असम जैसे परधिीय राज्य** इन लाभों के अभाव में **औद्योगकि केंद्र** वकिसति करने तथा नविश आकर्षति करने में संघर्ष करते हैं।

भारत में औद्योगकि असंतुलन के प्रमुख नहितिार्थ क्या हैं?

- **क्षेत्रीय असमानता एवं वकिासीय अंतर: महाराष्ट्र, गुजरात और तमलिनाडु** जैसे उच्च औद्योगकि संकेंद्रण वाले राज्यों में सामान्यतः **आय, रोज़गार, बुनयिादी अवसंरचना और GDP अधकि** होती है **(महाराष्ट्र (45.3 लाख करोड़ रुपए, 2024-25), उत्तर प्रदेश (25.5 लाख करोड़ रुपए, 2023-24) और तमलिनाडु (17.3 लाख करोड़ रुपए, 2024-25)।**
    - इसके वपिरीत, **बहिार (GDP 8.5 लाख करोड़, 2023-24), झारखंड (2.9 लाख करोड़ रुपए, 2023-24) और अधकिांश उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में कम उद्योग और कम औद्योगकि उत्पादन होने के कारण असमान आर्थकि वकिास तथा जीवन स्तर में व्यापक अंतर है।**
- **प्रवासन एवं शहरी दबाव: औद्योगकि केंद्र रोज़गार, उच्च वेतन और बेहतर सुवधिाओं** की तलाश में पछिड़े क्षेत्रों के श्रमकिों को आकर्षति करते हैं, जसिसे **अंतर-राज्यीय प्रवासन** बढ़ता है।
    - **मुंबई, बेंगलुरु और दल्लिी** जैसे शहरों में **भीड़भाड़, आवास की कमी, यातायात की भीड़, प्रदूषण और झुग्गयिों का वस्तिार** जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जसिसे **सामाजकि तथा पर्यावरणीय दबाव** बढ़ते हैं।
    - **EAC-PM (2023)** के अनुसार, भारत में **40.2 करोड़ घरेलू प्रवासी** थे, जनिमें प्रमुख **प्रवासन केंद्र** मुंबई, बेंगलुरु अर्बन, हावड़ा, सेंट्रल दल्लिी और हैदराबाद शामलि हैं।
- **राजकोषीय असमानताएँ एवं संसाधन असंतुलन:** औद्योगकि रूप से सघन राज्यों को अधकि **कर राजस्व, रॉयल्टी और नविश प्रवाह** प्राप्त होता है, जसिसे वे **बुनयिादी अवसंरचना, स्वास्थ्य तथा शक्षिा** के लयि बेहतर वत्तिपोषण कर पाते हैं।
    - वहीं, **कम औद्योगकि राज्य** मुख्यतः **केंद्रीय हस्तांतरणों** पर नर्भिर रहते हैं, **बजट घाटे** का सामना करते हैं और सीमति **सार्वजनकि नविश** कर पाते हैं। इससे **राज्यों के बीच वकिासात्मक अंतर** और बढ़ जाते हैं।
        - **उदाहरण:** शीर्ष 5 औद्योगकि राज्य — **महाराष्ट्र, कर्नाटक, दल्लिी, तमलिनाडु और गुजरात** ने वत्ति वर्ष 2023-24 में **कुल प्रत्यक्ष करों का 72%** योगदान कयिा, जबकि **उत्तर प्रदेश, बहिार तथा मध्य प्रदेश** ने मलिकर केवल **5%** योगदान दयिा। यह **गंभीर राजकोषीय असंतुलन** को उजागर करता है।
- **संघीय तनाव एवं नीतगित चुनौतयिाँ:** असमान औद्योगकि वृद्धि **केंद्र और राज्यों के बीच संसाधनों, नविश नीतयिों तथा वत्तिीय प्रोत्साहनों को लेकर तनाव उत्पन्न कर सकती है।**
    - प्रगतशिील राज्य **अधकि स्वायत्तता** का आग्रह कर सकते हैं, जबकि पछिड़े राज्य **वशिेष पैकेजों** की अपेक्षा रखते हैं, जसिके परणिामस्वरूप **सहकारी संघवाद और समन्वति आर्थकि प्रबंधन** हेतु कठनिाइयाँ उत्पन्न होती हैं।
- **सामाजकि-राजनीतकि एवं आर्थकि प्रभाव:** नरिंतर औद्योगकि असंतुलन **क्षेत्रीय असंतोष, राजनीतकि हाशयिाकरण और सामाजकि अशांति** को जन्म दे सकता है।
    - यह **नविश पैटर्न** को भी प्रभावति करता है, क्योंकि व्यवसाय **बेहतर बुनयिादी अवसंरचना, कुशल श्रम और औद्योगकि पारस्थितिकिी वाले क्षेत्रों** को प्राथमकिता देते हैं, जसिसे पछिड़े क्षेत्रों में **अवकिास का दुष्चक्र** बनता है।

भारत में औद्योगकि वृद्धि को बढ़ावा देने हेतु प्रमुख सरकारी पहलें क्या हैं?

- उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (PLI): **घरेलू वनिरि्माण क्षमता** को बढ़ाने हेतु।
- पीएम गति शक्ति- राष्ट्रीय मास्टर प्लान: **मल्टीमॉडल कनेक्टविटिी** अवसंरचना परयिोजना।
- भारतमाला **और** सागरमाला **परयिोजना:** कनेक्टविटिी में सुधार (सड़क और समुद्री)।
- स्टार्ट-अप इंडयि: भारत में स्टार्टअप संस्कृति को उत्प्रेरति करना।

- **मेक इन इंडिया 2.0**: भारत को **वैश्विक डिज़ाइन और विनिर्माण केंद्र** में बदलना।
- **आत्मनिर्भर भारत अभियान**: **आयात पर निर्भरता कम करने के लिये।**
- **विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)**: अतिरिक्त **आर्थिक गतिविधियों के सृजन और वस्तुओं व सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिये।**
- **MSME इनोवेटिव स्कीम**: विचारों को नवाचार में बदलने हेतु संपूर्ण मूल्य शृंखला को प्रोत्साहित करने के लिये, जिसमें **इनक्यूबेशन और डिज़ाइन हस्तक्षेप** शामिल हैं।

भारत में संतुलित औद्योगिक वृद्धि सुनिश्चित करने हेतु क्या उपाय किये जाने चाहिये?

- **औद्योगिक स्थान नीति एवं प्रोत्साहन: अविकसित और पिछड़े क्षेत्रों की ओर निवेश को मार्गदर्शन देने के लिये एक व्यापक औद्योगिक स्थान नीति बनाई जाएँ, जिसमें प्राथमिकता वाले क्षेत्र और रणनीतिक क्षेत्रीय आवंटन शामिल हों।**
  - कम औद्योगिक राज्यों को **महाराष्ट्र, गुजरात और तमिलनाडु** जैसे औद्योगिक रूप से उन्नत केंद्रों के साथ प्रतिस्पर्द्धी बनाने के लिये **कर छूट, पूंजीगत सब्सिडी, रियायती ऋण, कम GST तथा निवेश से जुड़ी कटौती** की पेशकश करना।
- **लक्षित बुनियादी अवसंरचना विकास:** औद्योगिक रूप से पिछड़े राज्यों में **परिवहन कॉरिडोर, औद्योगिक पार्क, लॉजिस्टिक्स हब, विश्वसनीय ऊर्जा और डिजिटल अवसंरचना** में निवेश किया जाएँ।
  - **औद्योगिक कॉरिडोर, विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर** जैसी पहलें औद्योगिक स्थापना की लागत को कम कर सकती हैं तथा **उत्तर-पूर्व एवं पूर्वी भारत** जैसे **दूरदराज़ क्षेत्रों** में उद्योगों को आकर्षित कर सकती हैं।
- **कौशल विकास एवं मानव पूँजी:** कम विकसित क्षेत्रों में **तकनीकी संस्थान, व्यावसायिक केंद्र और पुनः कौशल (Reskilling) कार्यक्रम स्थापित** किये जाएँ।
  - **स्किल इंडिया और प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना** जैसी योजनाएँ औद्योगिक क्लस्टरों के लिये तैयार कार्यबल उपलब्ध करा सकती हैं, जिससे **कौशल-आधारित वृद्धि** को प्रोत्साहन मिलेगा।
- **क्लस्टर-आधारित एवं पारिस्थितिकी तंत्र विकास: पैमाने की अर्थव्यवस्था, आपूर्ति शृंखला एकीकरण और नवाचार** को बढ़ावा देने के लिये **क्षेत्र-विशिष्ट औद्योगिक क्लस्टरों** को प्रोत्साहित किया जाएँ।
  - उदाहरण: **बिहार में वस्त्र क्लस्टर, उत्तर-पूर्व में इलेक्ट्रॉनिक्स** और **पूर्वी भारत में कृषि-औद्योगिक हब,** जो **स्थानीय उद्यमिता, रोज़गार तथा सतत् विकास** को गति देंगे।
- **नीति समन्वय एवं केंद्र-राज्य सहयोग:** सहकारी संघवाद को मज़बूत किया जाएँ, ताकि **केंद्रीय नीतियों को राज्य औद्योगिक योजनाओं** के साथ जोड़ा जा सके और **संसाधन, नियामक समर्थन एवं निवेश** सुनिश्चित किये जा सकें।
  - राज्यों की क्षमता के अनुसार **प्रोत्साहन पैकेज और सुधार** प्रदान किये जाएँ, ताकि **समान औद्योगिकीकरण को बढ़ावा मिल सके।**

निष्कर्ष

भारत की **असमान औद्योगिक वृद्धि ऐतिहासिक, भौगोलिक, अवसंरचनात्मक और नीतिगत कारकों** से उत्पन्न होती है। **संतुलित औद्योगीकरण** सुनिश्चित करने हेतु **केंद्र-राज्य समन्वय** आवश्यक है, जिसमें **अवसंरचना, कौशल विकास, राजकोषीय प्रोत्साहन** और **क्लस्टर-आधारित विकास** पर ध्यान दिया जाए, ताकि **क्षेत्रीय असमानताओं** को कम किया जा सके और प्रतिस्पर्द्धात्मकता को बढ़ाया जा सके।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारत में औद्योगिक असंतुलन ने क्षेत्रीय असमानता और राजकोषीय विषमताओं को बनाए रखा है, जिससे समावेशी विकास बाधित हुआ है। इसके प्रमुख निहितार्थों पर चर्चा कीजिये और संतुलित एवं न्यायसंगत औद्योगीकरण प्राप्त करने हेतु नीतिगत उपाय सुझाइए।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQ)

प्रिलिम्स:

प्रश्न. 'आठ मूल उद्योगों के सूचकांक (इंडेक्स ऑफ एट कोर इंडस्ट्रीज़)' में निम्नलिखित में से किसको सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है? **(2015)**

(a) कोयला उत्पादन
(b) विद्युत् उत्पादन
(c) उर्वरक उत्पादन
(d) इस्पात उत्पादन

उत्तर: (b)

मेन्स:

प्रश्न. "सुधार के बाद की अवधि में औद्योगिक विकास दर सकल-घरेलू-उत्पाद (जीडीपी) की समग्र वृद्धि से पीछे रह गई है" कारण बताइये। औद्योगिक नीति में हालिया बदलाव औद्योगिक विकास दर को बढ़ाने में कहाँ तक सक्षम हैं? **(2017)**

प्रश्न. आम तौर पर देश कृषि से उद्योग और फिर बाद में सेवाओं की ओर स्थानांतरित हो जाते हैं, लेकिन भारत सीधे कृषि से सेवाओं की ओर स्थानांतरित हो गया। देश में उद्योग की तुलना में सेवाओं की भारी वृद्धि के क्या कारण हैं? क्या मज़बूत औद्योगिक आधार के बिना भारत एक विकसित देश बन सकता है? **(2014)**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ensuring-balanced-industrial-distribution-in-india